P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-12* August- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

राजस्थान के स्वतंत्रता संग्राम में जैसलमेर राज्य की भूमिका : एक अध्ययन

दिलीप कुमार
शोधार्थी,
इतिहास विभाग,
जय नारायण व्यास
विश्वविद्यालय,
जोधपुर, भारत

सारांश

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन विश्व मानचित्र पटल पर अपनी तरह का एक महान जन आंदोलन था। महात्मा गांधी के नेतृत्व में इस ऐतिहासिक व क्रान्तिकारी जन आन्दोलन में हर वर्ग के लोगों ने तन–मन–धन से भारत की आजादी के लिए संघर्ष किया।

राजपूताना के नाम से प्रसिद्ध राजस्थान की मरूभूमि ऐतिहासिक युद्धों व शौर्य गाथाओं की साक्षी रही है। ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा राजस्थान के स्वतंत्रता सैनानियों पर अमानवीय अत्याचार एवं प्रतिरोधात्मक व्यवहार किया जाता था। ब्रिटिश सरकार स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाली रियासतों के शासकों से असंतुष्ट थी क्योंकि रियासतों के राजा, महाराजा व जागीदार ब्रिटिश सत्ता के प्रति स्वामिभक्त होते हुए भी स्वतंत्रता आंदोलन में भारत की आजादी के लिए तत्पर थे।[1] राजस्थान के शौर्य का वर्णन करते हुए कर्नल टॉड ने एनल्स एण्ड एण्टीक्यूटीज ऑफ राजस्थान में लिखा है कि राजस्थान में ऐसा कोई राज्य नहीं जिसकी अपनी थर्मोपल्ली न हो और ऐसा कोई नगर नहीं जिसने अपना लियोडिनास पैदा नहीं किया हो।[2]

मुख्य शब्द : भारतीय, स्वतंत्रता ,आंदोलन।

प्रस्तावना

स्वतंत्रता आंदोलन में अन्य रियासतों की तरह जैसलमेर रियासत में भी व्यापारियों ने लानी टैक्स को लेकर 1895 ई. में जन आंदोलन का बिगुल बजाया। यहाँ के कुछ उत्साही नवयुवकों ने 1915 ई. में सर्वहितकारी वाचनालय स्थापित करने का प्रयास किया, 1937–38 में लोक परिषद की स्थापना तथा 1932 ई. में रघुनाथ सिंह मेहता ने माहेष्वरी युवक मण्डल की स्थापना कर उसे जनसामान्य व राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़ने का प्रयास किया गया। इस समय तत्कालीन जैसलमेर रियासत के महारावल जवाहरसिंह थे, जो अत्यन्त क्रूर व निरकुंश प्रशासन को चला रहे थे। इस निरकुंशवादी शासन के विरूद्ध आवाज उठाने वाले प्रथम व्यक्ति व क्रांतिकारी अमर शहीद सागरमल गोपा थे।[3]

अमर शहीद सागरमल गोपा का जन्म 3 नवम्बर 1900 ई. को जैसलमेर राजवंश के पुरोहित अखेराज जी के परिवार में हुआ था। इनका लालन–पालन जैसलमेर के दुर्ग में बने अपने पैतृक घर में हुआ था।

स्वतंत्रता के विचारों के धनी सागरमल गोपा परिवार को राजभक्ति के कारण जैसलमेर रियासत के राजस्व से हुई आय में से भाग मिलता था। लेकिन महारावल जवाहरसिंह के अत्याचारी शासन व्यवस्था से तंग आकर सागरमल के पिता ने अपने पुत्रों को जैसलमेर रियासत में नौकरी नहीं करने की सलाह दी। जिसके फलस्वरूप सागरमल गोपा ने नागपुर को अपना निवास स्थान बनाकर पत्रकारिता के माध्यम से देशी रियासतों के द्वारा आम जनता पर किये जाने वाले अत्याचारों का घोर विरोध किया।[4]

सागरमल गोपा स्वयं एक कवि व साहित्यकार थे। उन्होंने अपने पत्रों एवं कविताओं के माध्यम से जैसलमेर राजकाज की तीखी आलोचना की जैसलमेर राज्य में झूठ के बल पर चल रहे शासन के बारे में जेल में एक कविता लिखी जो इस प्रकार थी –

''कूड़ी अदालत कूडो शासन,

कूडो कानून करे मन चायो
कूड़ो गवाह कूड़ कुरान को,
आई की आन से कूड़ समायो
सैशन में जब केश गयो,
तब लेष नहीं में सांच को पायो
ढोल के तान पै नाचता पोल,
मदारी घूमाने ज्यों ढोल बजायो।''[5]

सन् 1920–21 में गांधी जी के नेतृत्व में भारत में जब असहयोग आन्दोलन चल रहा था, उसी समय सागरमल गोपा ने महारावल के अत्याचारी शासन के विरूद्ध जैसलमेर वासियों को संगठित कर एक प्रजामंडल बनाया तथासमाचार पत्रों के माध्यम से महारावल के निरकुंश शासन के विरूद्ध अभियान चलाया तथा राजतंत्र के अत्याचारों से लोगों को अवगत करवाया।

भारत के समाचार पत्रों तरूण राजस्थान, आगी बाग, अखण्ड भारत में जैसलमेर के महारावल की निरकुंशता एवं दमन के समाचार तथा जन चेतना जागृत करने वाली खबरे छापी गई। वर्धा से प्रकाशित समाचार पत्र राजस्थान केसरी तथा दिल्ली के समाचार पत्र विजय ने भी जैसलमेर के उत्तरदायी शासन की स्थापना हेतु अहम् योगदान दिया।[6]

सागरमल गोपा ने जैसलमेर के उत्साही नवयुवकों रघुनाथसिंह मेहता व आईदान सिंह मेहता के साथ मिलकर सर्वहितकारिणी वाचनालय की स्थापना की जो जैसलमेर जैसी पिछड़ी रियासत के लिए क्रांतिकारी कदम था। इस वाचनालय की देशभक्ति से सम्बन्धित साहित्य व पत्र–पत्रिकायें मंगवाने का अधिकार नहीं था फिर भी प्रवासी जैसलमेर वासियों ने चिट्ठी पत्र के बहाने से स्वतन्त्रता संग्राम से संबंधित पत्र–पत्रिकाएं मंगाते थे जिसे पढ़कर लोगों में स्वतंत्रता आंदोलन की भावना जागृत होने लगी।

सागरमल गोपा ने नागपुर से भी ओजस्वी राष्ट्रीय साहित्य मंगवाया जिससे देश के अन्य भागों में चलाए जा रहे आजादी के आंदोलन में जैसलमेर वासियों को अवगत करवाया गया।[7] सागरमल गोपा ने अपने सहयोगियों के साथ मिलकर 7 जनवरी 1918 ई. को जैसलमेर रियासत में पहली बार सदरमण्डी (चुंगी चौक) में विशाल सभा का आयोजन कर देश में चल रहे राष्ट्रीय आंदोलन के बारे में जनसाधारण को अवगत करवाया तथा तत्कालीन महारावल से राज्य में मिडिल तक षिक्षा व्यवस्था करवाने बाबत् एक अनुरोध पत्र लिखा, लेकिन जैसलमेर राज्य में महारावल की इच्छा से ही संविधान चलता था इनकी आज्ञा को कानून माना जाता था। ऐसी स्थिति में उनके अनुरोध पत्र को एक गम्भीर अपराध माना गया, सागरमल गोपा ने पुनः जैसलमेर छोड़कर भाग जाना पड़ा।

फिर भी इन्होंने अपने राज्य से बाहर रहकर अप्रत्यक्ष रूप से अपने स्थानीय साथियों से राष्ट्रीय आन्दोलन की खबरे प्रकाशित कर देशभक्ति की भावना को बनाए रखा। जैसलमेर के महारावल द्वारा राष्ट्रीय आन्दोलन के कुचलने के प्रयासों को उगाजर करने हेतु ''रघुनाथसिंह का मुकदमा'' नामक पुस्तक का प्रकाशन कर लोगों का ध्यान आकर्षित किया इसके अलावा इन्होंने ''जैसलमेर का गुण्डाराज'' नाम कविता लिखी जो इस प्रकार थी –

''प्रथम रतन पूना जिण देश किया सूना
चुगलखोरी का नमूना, भरे राज का कन्न है
चापलूस चानणमल, चुके नहीं एक पल
जेल में दरोगा करणू खल खेल चका फन्न है
डॉक्टर दरगू पायो व्याभिचारी फल है
नंदिये, नैपाल ने किया देश का पतन है
राजमल गुमान महादान डाकू आदि
भूपति? जवाहिर के ऐसे रतन हैं।''[8]

इस कविता से जैसलमेर के महारावल एवं उनके चापलूस क्रोधित हो गये क्योंकि इसमें महारावल व उनके सलाहकार अधिकारी के आंतक का खुला चिट्टा प्रस्तुत किया जिससे क्रोधित होकर राज्य प्रशासन ने उनके खिलाफ आरोप पत्र दायर कर उनके जैसलमेर आगमन पर प्रतिबन्ध लगा दिया। नागपुर में सागरमल गोपा के संदेश की पालना में 16 नवम्बर 1930 को रघुनाथसिंह मेहता के नेतृत्व में जैसलमेर दिवस का आयोजन उत्साहपूर्ण वातावरण में मनाया गया, लेकिन राज्य प्रशासन ने इसे गम्भीरता से लेते हुए रघुनाथसिंह मेहता व उनके सहयोगी आईदान सिंह को कैद कर लिया व सागरमल गोपा की अनुपस्थिति में इन्हीं लम्बी कैद की सजा सुनाई गयी।[9]

सागरमल गोपा के पिता अखेराज गोपा का अक्टूबर में देहान्त हो गया तो व अपनी माँ को सात्वना देने हेतु जैसलमेर आये, इससे पहले इन्होंने जोधपुर रेजीडेन्ट से मुलाकात कर उन्हें जैसलमेर में संरक्षण प्रदान करने की प्रार्थना की।

इस बीच तत्कालीन जैसलमेर महारावल के अधिकारियों ने सन् 1941 ई. में बिना किसी गिरफ्तारी वारंट के जुर्म बताए अपने घर के बाहर गिरफ्तार कर उनके हाथो में हथकड़ियां व पांवों में कड़ा बेडिया लगाकर जेल में बन्द कर दिया तथा इनके शरीर के जोड़ पर चोट देकर उस पर मिर्ची पाउडर छिड़ककर प्रताड़ित किया जाने लगा। जैसलमेर में राजनैतिक चेतना के रूप आंदोलन उनकी रिहाई हेतु प्रारम्भ हो गया, जब यह आंदोलन अपनी चरम सीमा पर था उसी समय इन्हें भयंकर यातनाएं दी जाने लगी, इसी बीच जवाहरलाल नेहरू हीरालाल शास्त्री, जयनारायण व्यास तथा चांदकरण

शारदा जैसे उच्च कोटि के नेताओं द्वारा महारावल को गोपाजी को छोड़ने हेतु पत्र लिखे गये।[10]

समाचार पत्रों में भी सागरमल गोपा के बारे में समाचार प्रकाषित हुए तथा शीर्ष नेताओं द्वारा गोपा जी के रिहाई हेतु प्रयास किए गए, लेकिन चार वर्ष तक गोपा जी का कोई समाचार जेल से बाहर नहीं आ सका महारावल ने उन्हें छोड़ने से मना कर दिया। सन् 1946 में यह घोषणा की गई की गोपाजी की कारावास में मृत्यु हो गई है, इस वीभत्स हत्याकाण्ड की गूँज पूरे भारत में हुई जवाहरलाल नेहरू ने वक्तव्य जारी करते हुए कहा – ''राजनैतिक कार्यकर्ता के साथ ऐसा व्यवहार करना एक जघन्य गुण्डागर्दी है।[11]

इस प्रकार जैसलमेर के राजनैतिक जागरण व देशभक्ति की भावना उत्पन्न करने में सागरमल गोपा का सक्रिय योगदान रहा। भारत के आजादी आंदोलन में हर समुदाय ने बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया था, उनमें से कवियों ने भी अपनी लेखनी व तेजस्वी वाणी के बल पर जनमानस में क्रांतिकारी विचारों का प्रचार प्रसार कर स्वतन्त्रता आंदोलन में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। जैसलमेर रियासत में ऐसे ही एक लोक कवि तेज का जन्म 1938 ई. (आषाढ़ मास) को शाकद्वीपीय ब्राह्मण परिवार में हुआ था। अपनी प्रारम्भिक शिक्षा दीक्षा के उपरांत मेहता अजीत सिंह से इन्होंने पिंगल की शिक्षा प्राप्त कर आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त किया। तत्कालीन जैसलमेर रियासत के रूढ़िवादी व सामाजिक जीवन में कई बुराइयों व कुरीतियों का सम्मिश्रण था। लोक कवि तेज ने इनका विश्लेषण कर अपने काव्य ग्रन्थों व ख्यातों में इनका जीवन चित्रण नाटक के माध्यम से प्रस्तुत किया तथा तेज कवि अखाड़ा के माध्यम से सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार कर राजनैतिक क्रांति लाने का महत्वपूर्ण कार्य किया।[12] इनकी कृतियों में श्री रामसा पीर अवतरित, श्री शनिचर जी लावणी, तेज कवि कृत्त राजा जोग भर्त्तहरि का खेल, नैना खसम का खेल, स्वराज बावनी, आईनाथ अड़तालिसी, मूमल मेहन्दरे का खेल प्रमुख थी।

कवि तेज का स्वतंत्रता के प्रति झुकाव इनकी जन्मजात प्रवृति की विशेषता थी अपनी कृति 'स्वराज बावनी' में 52 छंदो के माध्यम से अपने हृदय के उद्‌गार व्यक्त करते हुए बड़े ही सरल शब्दों में व्यक्त किया कि हमें स्वराज कैसे प्राप्त हो सकता है। कवि तेज ने महात्मा गांधी के नेतृत्व में नागपुर में आयोजित अखिल भारतीय कांग्रेस सम्मेलन में महात्मा गांधी के विचारों से प्रेरित होकर स्वराज बावनी, कांग्रेस की लावणी व वंदेमातरम नामक देशभक्ति से ओतप्रोत कविताओं की रचना की।[13] वन्देमातरम मे भारत माता की वेदना को इन्होंने स्वराज व वंदेमातरम् द्वारा लोगों में राष्ट्रीय स्वतंत्रता हेतु जागृति पैदा की उन्होने स्वराज बावनी में लिखा है कि –

''श्री गांधीजी महाराज महात्मा के आयुवृद्धि हो,
कवि तेज कहे जाके मुख का,
सकल वाक्य सिद्ध हो
हिन्द सब हुक्म बताएगा
तुम्हारा कब स्वराज होगा।''[14]

कवि तेज का कहना था कि गाँधीजी की बात मानने से ही हमें स्वराज प्राप्त होगा उन्होंने गाय जो संस्कृति की प्रतीक रही है कि महत्ता एवं इसकी सेवा की बात कही उन्होंने कहा कि :–

''हिन्दू मुस्लिम जैन, फारसी जुदे नहीं जाने
इष्ट त्यौहार, धर्म अब इकसा मन भीतर माने
धर्म द्वेशी न कहायेगा।''[15]

अर्थात् उनके अनुसार भारतवर्ष हम सब भारतीयों का है। हमें आपसी मेल जोल के साथ प्रेमपूर्वक रहना चाहिए, झगड़ा व द्वैष किसी से भी नहीं रखना चाहिए। कवि तेज ने हिन्दी भाषा को राष्ट्रीय भाषा के रूप में स्वीकार किया तथा गांधीजी के नेतृत्व में भारत को आजादी दिलाने का प्रयास किया। नागपुर से कवि तेज कलकत्ता गए तथा वहां स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया, उन दिनों सभा आयोजित करने, जुलूस निकालने पर पाबंदी थी, फिर भी कवि तेज ने कानून का उल्लंघन करते हुए देश भक्ति गीत, गद्य पद्य युक्त गाने शुरू कर दिये जिससे थोड़ी ही देर में वहाँ भीड़ एकत्रित हो गई। दूसरे दिन जब सविनय अवज्ञा भंग करने करने के आरोप में पुलिस गिरफ्तार करने पहुँची तो जेलर से टकराते हुए उन्होंने तीक्ष्ण शब्दों में कहा कि –

''कमिश्नर खोल दरवाजा, हमें भी जेल जाना है
यह हिन्द नहीं तेरे बाप दादो की, हमारी
मातृभूमि को बनाया बंदीखाना है।''[16]

निष्कर्ष

इस प्रकार कवि तेज ने अपनी ओजस्वी कविताओं द्वारा जनमानस में देश की स्वतंत्रता तथा स्वराज प्राप्ति के लिए क्रांति जगायी जो आगे चलकर गांधीजी के स्वतन्त्रता संग्राम आंदोलन का आधार बनी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *पानगाडिया बी.एल. –राजस्थान में स्वतन्त्रता संग्राम प्रकाशक, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी जयपुर 1985, पृ.102*
2. *कर्नल टॉडकृत एनत्स एण्ड एण्टीक्यूटीज ऑफ राजस्थान में उद्धत।*
3. *पानगाड़िया बी.एल.–बही, पृ. 112*
4. *नाटाणी लक्ष्मीनारायण–राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम के अमर पुरोधा राज. स्वर्ण जयन्ती समारोह, जय श्रद्धासुमन एवं प्राक्कथन में उद्धृत।*
5. *शर्मा नंदकिशोर–जैसलमेर राज्य का इतिहास सीमान्त प्रकाशन, जैसलमेर, पृ. 20*

6. *गढ़वीर डॉ. एम.आर.–जैसलमेर राज्य का सामाजिक व सांस्कृति इतिहास, पृ. 130*
7. *गढ़वीर डॉ. एम.आर.–जैसलमेर राज्य का सामाजिक व सांस्कृति इतिहास, पृ 128*
8. *बोड़ा रामचन्द्र–अमर शहीद सागरमल गोपा, पृ.15*
9. *बोड़ा रामचन्द्र–अमर शहीद सागरमल गोपा, पृ. 18*
10. *मरू महिमा पत्रिका विशेषांक–लोक कवि तेज एन.के. शर्मा का आलेख, पृ.18*
11. *बही–पृ.20*
12. *शर्मा एन.के.–शाकद्वीपीय ब्राह्मण बंधु का अंक 7 अक्टू. 1999 कवि तेज विशेषांक, पृ.48*
13. *शर्मा एन.के.–शाकद्वीपीय ब्राह्मण बंधु का अंक 7 अक्टू. 1999 कवि तेज विशेषांक, पृ.50*
14. *मरू महिमा स्मारिका–पृ.120*
15. *स्वतंत्रता आंदोलन से संबंधित संगोष्ठी में हुक्माराम सुथार का आलेख से उद्धृत–पृ.18*
16. *स्वतंत्रता आंदोलन से सम्बन्धित संगोष्ठी में हुक्माराम सुथार का आलेख से उद्धृत– पृ.18*